website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण

हम पूर्व अंक-8 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-09

गतांक से आगे

हम पूर्व अंक-8 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

इलाहाबाद के हनुमान मंदिर

(1)बंधवा के लेटे हनुमान जी

गंगा-यमुना के मध्य किला के सामने लेटे हुए हनुमान जी का प्राचीन मन्दिर है। यह श्रद्धा एवं आस्था का प्रमुख केन्द्र है। संगम स्नान के लिये आये हुये यात्रियों की यहां भीड़ लगी रहती है। सायंकाल प्रतिदिन उनका श्रृंगार होता है और नगर के भक्त लोग, विशेषकर शनिवार एवं मंगलवार को अत्यधिक संख्या में दर्शन, पूजन करने आते हैं।

(2) पातालपुरी मन्दिर

बंधवा के हनुमान जी के मन्दिर के पास किला के अन्तर्गत आंगन के पूर्वी द्वार की ओर भूमिस्तर के नीचे पातालपुरी मन्दिर है। नीचे कक्ष में अनेक खम्भे लगे हुए हैं। कक्ष में और दीवारों पर विभिन्न देवताओं की 40 मर्तियाँ हैं। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार 1735 ई0 में बाजीराव पेशवा ने करवाया था।

अन्य प्रमुख मंदिर एवं आश्राम

(1) भरद्वाज आश्रम

प्रयाग के कर्नलगंज मुहल्ले में आनन्द भवन के निकट यह आश्रम है। यह प्राचीन विद्याध्ययन का केन्द्र था। सुदूर प्रान्तों से अध्ययनार्थ यहां विद्यार्थी आते थे। इस आश्रम की स्थापना मुनि भरद्वाज ने की थी। इसमें भरद्वाजेश्वर शिवलिंग है। आज भी यह तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र है। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं-

भारद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा, तिन्हहिं रामपद अति अनुरागा।
भारद्वाज आश्रम अति पावन, परम रम्य मुनिवर मन भावन।।

(2) दुर्वासा आश्रम

गंगापार त्रिवेणी संगम से लगभग 10 किमी0 और छतनाग (शंख माधव) से 7 किमी0 दूर ककरा ग्राम में स्थित है।

(3) अक्षय वट

तीर्थ की दृष्टि से प्रयाग में संगम स्नान तथा अक्षयवट दर्शन का सर्वाधिक महात्म्य है। 'अक्षय' का शाब्दिक अर्थ होता है जिसका कभी क्षय (नाश) न हो और वट का शाब्दिक अर्थ होता है बड़ का पेड़ (बरगद)। इस प्रकार अक्षयवट का पूर्ण अर्थ होता है, कभी न नाश होने वाला बरगद का पेड़। प्रयाग में स्थित अक्षयवट इसी श्रेणी में आता है। प्रयाग भगवान विष्णु का क्षेत्र है और यहाँ स्थित अक्षयवट में भगवान विष्णु सदा निवास करते हैं (पद्म पुराण अध्याय 72 श्लोक नं0 16)।

श्री पद्मपुराण में प्रयाग महात्म्य के अन्तर्गत कई स्थानों पर अक्षयवट पर भगवान विष्णु की उपस्थिति का वर्णन किया गया है। इस पुराण (अध्याय-72 पद सं0 23 एवं 35) में वर्णन किया गया है कि ''मैं अपने सभी रूपों को एकाकार करके ब्रह्माण्ड को पेट में रखकर बाल रूप धारण करके अक्षयवट पर सोता हूँ।''

सर्वरूपाणि संहृत्य बालरूप धरस्ततः।
ब्रह्माण्ड मुदरे कृत्वा शयें तोक्षयपादपे।।

(पद्मपुराण अध्याय 72 पद सं0- 23)

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि अक्षयवट के दर्शन मात्र से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन और तीनों लोकों-स्वर्गलोक, मृत्युलोक (नरक) और पाताल लोक के आवागमन से मुक्ति मिल जाती है अर्थात् जो प्राणी इस विष्णुरूपी अक्षयवट का दर्शन करता है, उसे वेद, शास्त्र, पुराण, तीर्थयात्रा व्रत, दान आदि अनेक पुण्यों के बराबर फल मिलता है और वह सम्पूर्ण क्रियाओं से मुक्त हो जाता है। यह अनेक सिद्धियों को प्रदान करने वाला वृक्ष है, जिसके स्मरण करने से ही सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। इसकी प्राचीनता का आभास इसी से हो जाता है कि पुराणों में भी इसका उल्लेख किया गया है। पुराणों के अनुसार देवताओं का प्रिय अक्षयवट गंगा यमुना के मध्य में जहां तक छः तटों का दर्शन होता है, वह अक्षयवट का क्षेत्र है, और यह क्षेत्र प्रयागराज है। यहाँ अक्षयवट तीनों देवताओं- सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, सृष्टिपालक विष्णु और सृष्टि संहारक शिव के स्वरूप में विराजमान है। इसकी जड़ें सातों पाताल तक फैली हैं और यह अक्षयवट प्रलय और कल्पान्तर के समय और बाद में भी अक्षय बना रहता है। ऐसी विनाशकारी परिस्थितियों में भी इस वृक्ष को कुछ नहीं होता क्योंकि मूल में स्वयं माधव तथा देवी महालक्ष्मी, भगवती पार्वती, देवाधिपति शिव और सहस्त्रों देवतागण इसमें निवास करते हैं। यह वृक्ष सदैव एकदशा में रहता है (मिश्र प्रशान्त 1998)।

चित्र-1: प्रयागराज के हनुमान मंदिर (1) लेटे हनुमान मंदिर व (2) पातालपुरी अक्षयवट

चित्र-2 : प्रयागराज के प्रमुख मंदिर व आश्रम (1) भरद्वाज आश्रम व (2) वेणी माधव मंदिर

अक्षयवट की महिमा का उल्लेख वाल्मीकि जी ने रामायण में किया है तथा इस अक्षयवट को श्यामवट कहा है (रामायण, अयोध्या काण्ड)। तुलसीदास कृत रामचरित मानस में भी अक्षयवट की महत्ता अनेक स्थानों पर बताई गयी है। वनगमन के समय चलते-चलते रामचन्द्र जी ने सीताजी को थका हुआ देखकर इसी वट वृक्ष के नीचे थोड़ा विश्राम करते हैं (अयोध्याकाण्ड अध्याय 55, 6, पद सं0 190)।

अक्षयवट की महत्ता ने केवल भारतवर्ष के तीर्थयात्रियों को ही नहीं बल्कि विदेशों के तीर्थयात्रियों को भी प्रभावित किया है। चीनी यात्री-ह्वेनसांग जो 644 ई0 में सम्राट हर्षवर्धन के समय भारत आया था। उसने तत्कालीन अक्षयवट का वर्णन करते हुए उसे 'अन्डाइंग फिा ट्री' कहा। इसी महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जो व्यक्ति यहाँ आत्मघात द्वारा अपने प्राण त्याग कर देते हैं, वे सदैव के लिए स्वर्ग चले जाते हैं। कुमारिल भट्ट के अक्षयवट के नीचे प्राण त्यागने से ह्वेनसांग के कथन की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। कुमारिल भट्ट ने गुरूद्रोह से मुक्ति पाने के लिए प्रयाग में अक्षयवट के नीचे आत्मदाह किया था।

अक्षयवट के प्रति तीर्थयात्रियों की आस्था पुराणों से लेकर सम्प्रति तक अक्षय बना हुआ है। अक्षयवट और प्रयाग एक दूसरे के सम्पूरक हैं। तीर्थराज के रूप में जो स्थान प्रयाग को प्राप्त हैं उसी प्रकार अक्षयवट को सभी वृक्षों में श्रेष्ठ माना जाता है। वर्तमान समय में यह अक्षयवट अकबर द्वारा निर्मित किले में स्थित पातालपुरी मन्दिर में एक क्षीणकाय वृक्ष के रूप में है। यह 644 ई0 के समय के श्यामवट की भांति विशालकाय और अनेकों शाखाओं वाला नहीं रह गया है, परन्तु अपनी धार्मिक आस्था एवं महिमा के कारण आज भी भक्तगणों के श्रद्धा का केन्द्र और पूज्य है।

(4) प्रतिष्ठानपुर (झूँसी)

यह गंगापार का प्राचीन स्थान है। इसको 'झूंसी' कहा जाता है। यहां हंसकूप तथा हंसतीर्थ प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त यहां समुद्रकूप प्राचीन स्थल है। झूँसी प्रयाग में गंगा के पूर्वी तट पर एक अति प्राचीन स्थान है। 'लिंग पुराण' के अनुसार इला के पुत्र पुरूरवा ने यमुना से उत्तर की ओर प्रतिष्ठानपुर को अपनी राजधानी बनाया था। पुरूरवा को कालिदास ने अपने प्रख्यात नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' का नायक बनाया था।

यहाँ पर कुमारगुप्त के समय की 24 अशर्फियां मिली हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्तकाल में प्रतिष्ठानपुर का कुछ महत्व अवश्य रहा होगा। इसके अतिरिक्त यहाँ पर 'समुद्रकूप' नामक विशाल कूप भी मिला है जिसे सम्भवतः सम्राट समुद्रगुप्त ने खुदवाया था।

झूँसी में भी तीर्थराज सन्यासी संस्कृत पाठशाला, बाबा गंगागिरि की कुटी हंसकूप तथा हंसतीर्थ, बाबा दयाराम की कुटी, समुद्रकूप, शेख तकी की मजार और छतनाग स्थान विशेष उल्लेखनीय हैं।

(5) वेणी माधव मंदिर

प्रयाग भगवान विष्णु का निवास क्षेत्र है। भगवान विष्णु के द्वादश स्वरूप का दर्शन प्रयाग में विभिन्न नामों से भिन्न-भिन्न स्थानों पर होता है, उनमें वेणी माधव मन्दिर एक प्रधान श्रद्धा स्थल है। यह मन्दिर दारागंज में निरालामार्ग पर जो नागवासुकि को जाती है, पर स्थित है। प्रयाग में वेणी-माधव जी संगम के अधिष्ठाता कहे जाते हैं।मस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने की शक्ति के कारण वैष्णवों में उनकी मान्यता प्रयाग में सर्वोपरि मानी जाती है। प्रयाग महात्म्य शताध्यायी के अध्याय 73 से 75 तक इनका विशेष यश वर्णित है। 'श्री भगवान वेणी माधव व्रत-कथा' में एक गजकर्ण नामक असुर की कथा दी गयी है जिसके अत्याचार के कारण तीनों धाराएं सूखने लगी थी। नारद जी की सहायता से माधव ने उसका सुदर्शन चक्र से वध करके इस क्षेत्र का उद्धार किया। इसमें एक स्त्री के द्वारा त्रिवेणी में डूब कर आत्महत्या का प्रसंग भी मिलता है, जिसे वेणी माधव की कृपा से एक संन्यासी ने बचा लिया। शिव की महत्ता को अंगीकार करते हुए, विष्णु का जो रूप प्रयाग में प्राप्त होता है, वह तीर्थयात्रियों एवं पुरोहितों द्वारा वेणीमाधव या त्रिवेणी माधव कहलाता है। कल्पवास भी इन्हीं की कृपा से होता है। एक मान्यता यह भी है कि वेणीमाधव का मन्दिर पहले संगम के पास ही था पर जब किला बना तो उसे हटाकर मूर्तियों को दारागंज में स्थापित कर दिया गया। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में वर्णन करते हुए लिखा है कि त्रिवेणी स्नान के बाद वेणीमाधव की पूजा की जाती थी तब अक्षयवट का स्पर्श करने का विधान था।

कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक में...